सु दीप साम सोभयं। सुगंध गंध ओभयं ॥
कपूर पूर जंभरं। मृगज्ज बास अंगरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
सु सज्जि सिंघ आसनं। समोल रोहि वासनं ॥
कनक्क छत्र दंडयं। सु रंग रंग मंडयं ॥ छं० ॥ १३ ॥
अबीर [1]जष्प कर्दमं। सरोहि ग्रेह सुर्दमं ॥
अभूत साष लोभयं। अबीर भूर ओभयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
अयास धूम्र धोमरं। प्रसार वास ओमरं ॥
प्रसून ब्रन्न वन्नयं। स भूषनं स भ्रम्मयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
घनं सु सार सम्मरं। अभूत वास अम्मरं ॥
धुअं कुसम्म केसरं। सुरं अभूत जे सुरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
तहां सु राज आसनं। सरोहिं सिंघ सवसनं ॥
सुपाय अंग रष्षियं। कला जु काम लष्षियं ॥ छं० ॥ १७ ॥
प्रवीन भाव पासं। विचित्र चित्र पासयं ॥
भवंति क्रंति भूषनं। सुबुद्धियं विदूषनं ॥ छं० ॥ १८ ॥
प्रहून [2]विद्धि बासनं। अभूत [3]सिद्धि आसनं ॥
बरष्ष षोडसं समं। अदोस रूपयं [4]रमं ॥ छं० ॥ १९ ॥
कला विग्यान विद्वयं। सु पास भूप सिद्वयं ॥
सिंगार सार सारयं। अभूषनं स धारयं ॥ छं० ॥ २० ॥
ग्रहे विदून चामरं। सु विंभ्रू राज सामरं ॥
धरंत कब्बि पन्नयं। सु कंठ थान सन्नयं ॥ छं० ॥ २१ ॥
सु घंन्नसारं पानयं। सुगंध विद्व मानयं ॥
करें सु [5]द्रप्पकं करं। सु सष्षि [6]अद्धि संमरं ॥ छं० ॥ २२ ॥
शृंगार ग्रेह सोमयं। अभूत दुत्ति ओमयं ॥
समोभ भ्राम्मयं सजं। सुबास वासवं लजं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम।

(१) क्रु. ए.-दच्छ, जच्छ, जच्छ।
(२) मो.-विद्ध। (३) मो.-मद्धि। (४) को. ए.-समं।
(५) कृ.-दर्प, ए.-दप्प। (६) मो.-अठ्ठ।

कवित्त ॥ रचिं धाम अभिराम। राज हूरि थान बयट्ठौ ॥
दिपत दीह सुभं लीह। तेज उब्भर तप जिट्ठौ ॥
बोलि चंद चंडीस। बोलि जद्दव रा जामं ॥
निडुर बोलि कमधज्ज। अत्ति जामनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर। लोहानौ आजानभुअ ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि। ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल ताम नाइक्क। सथ्थ सथ्थंह सब साजं ॥
बोलि पाच कर्नाटि। बैठि गानं बर बाजं ॥
नाटक भेद निबंध। बूझि राजन बर बत्तं ॥
कवन कला कत पाच। कहौ नाइक निज सत्तं ॥
नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि। एह पाच देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय। कला मनोहर चिंति मय ॥छं०॥२५॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निढ्ढुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चर्यौ ताम कविचंद बानि। नायक्क अहोमति सुरम जानि ॥
सो धरौ कला विचार साज। निढ्ढुरह बयट्ठौ पास राज ॥छं०॥२६॥
नाटक्क बिबिध बुझ्झै बिनान। विचार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि हो चंद भट्ट। न्रप पास बयट्ठौ की सुभट्ट ॥छं०॥२७॥

कविचंद का निढ्ढुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्यौ चंद नायक सरीस। कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव। ता सुअन कमध निढ्ढुरह एव॥छं०॥२८॥

(१) मो.-देह। (२) कृ.-चंद पुंडिर।

नायक्क कहै हय वत्त सच्च। आवन्न केम हुअ दिल्ली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक्क चिंत। आवन्न कित्ति करन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
जै सिंघ कियौ तहां उह्व काज। अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु बेस उभय बंधव सरूप। श्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ महल्ल निढ्ढुर समेक। कहि कुमर राज सह्यौ सु एक ॥
उच्चर्‌यौ ताम निढ्ढुरह देव। कर कुमर हंम मिच्छंत सेव ॥३१॥
जयचंद सम्मुष निरषेत ताम। कल [1]कलिय लग्ग चामठ्ठ धाम ॥
करि संभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह। सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना।

कवित्त॥ समय एक निढ्ढुर। कमंध आषेट सपत्तौ ॥
बिधि कुरंग दुअ तीनं। उभय एकल निज घत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग। सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार। सथ्थ संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि। घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये वाग आगम सकल। लहयौ निढ्ढुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निढ्ढुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल॥ निढ्ढुर ताम [2]गोठिल्लिय अप्पं। तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पकवान सरस गति सारं। रच्चे मंस बिबह बिसवारं ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे। [3]चपतौ सथ्थ सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राक सुमन सब सोहै। कासमीर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं। मादक आइ अग्गि जहां जग्गं ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं। आयौ आतुर [5]वग्ग तुरत्तं ॥छं०॥३६॥

(१) ए. कृ. को.-मलिय। (२) ए.-गोगिय। (३) मो.-नृप तौ।
(४) मो.-सुरंगं। (५) मो.-बोगि।

[1]कठिनं वाच निढ्ढुर सम बाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। लुट्टी बस्त गोंठि मनि सावं॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ। फेरे मुष जैचंद बिरत्तौ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि प्रिथ्थ बधायौ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाटय कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दुहा॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बेंन उचार॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जै जै अर्थ उचार॥ छं० ॥ ४० ॥

गाथा॥ राजनीति गति रुवं। गुन संपूर चौस एकंगं॥
जे रंजे रज ध्यानं। सुनि कविराज सब्ब संपूरं॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन।

साटक॥ विद्या विनय विवेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा॥
[3]सुविचारो सु विचक्षणो रु सुमनं सौजन्य सौंदर्य्यत्ता॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला॥ छं० ॥ ४२ ॥
मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं॥
[5]उद्दायं उद्दार दाव उछहं एते गुना राजयं॥

(१) ए.-कनिक। (२) ए. कृ. को.-मार सलयं, विव्वेक विचारयं।
(३) ए. कृ. को.-विचारं ससु तंप्प सोष सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं।
(४) ए. कृ. को.-भाग्यं।
(५) ए.-जद्दायं।

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं ॥
सोयं [1]नीति सनीत कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं [2]जोरयं ॥ छं० ॥ ४३॥
दूहा ॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि । अहो चंद बरदाइ ॥
राग विनोदह चौसषट । कहौ सुनौ विधिसाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥
* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोदयं । सुरंबंध न्रत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वादयं । अभिलाष अर्थ पदादयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥
[3]बक्यात जग्यपवीतयं । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत बालक तल्ययं । ते पढ़य तर्क विजल्पयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रंमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयंच प्रमोदयं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्ठित तुष्टिहं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
प्रसंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं ॥
धीरज्ज धीर जुधं वरं । सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ सुनि नायक राजन्न मति । जंपहि दिल्ली नरेस ॥
पात्रं प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक बिनान ॥
पाछैं न्रत्य प्रचारै भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन।

भुजंगी ॥ तबै वोलियं अप्प नाइकत्र ग्गं । मुषं पाच आरोह उच्चार जंग्गं ॥
धरै आप बीना सुरंसाज सारें । सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥
छं० ॥ ५१ ॥
धुनिं रूप रागं सुहानं उपाए । रचे च्यार रागं सुभा सुभ्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास थानं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-तीन। (२) ए.-को.-चौवरं।
* ए. कृ. को.· में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है।
(३) कृ. ए.-वक्यत, वक्मत।

मनं सुर्व मोहै अति राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। बयं विस्मयं वेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३॥
दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नयं सिष्ष जग्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ौ मत्त वेली चितं पच हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहनां कि आपसे क्या मोल कहूं।

तबै बोलि नाइक राजन्न तामं। कहा मोल पाचं कहौ द्रव्य नामं॥
कहै नाम नाइक पांचं सरीसं। कहा मोल पाचं न्रपं जोंग जीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पाचं सुभासं॥
विसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पाच तुट्ठे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दूहा ॥ काम कला तुट्ठिय न्रपति। सु ग्रह पवारी द्वार॥
तिन अवास दासी सघन। अह निस रह रषवार॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव: संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ न्रप प्रात । आइ सामंत स्हर भर ॥
ढट्टा दिसि [1]उत्तरिय । राय चामंड बीर बर ॥
बंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावद्दिसि अरि नन्हे । सीम कहै नह आजं ॥
कैमास बोलि मंची तहां । मंच लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुभ्भ । पद्धरी छंद बरनैति मभ्भ ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सद्दै सु जुद्ध संग्राम श्रीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मंत्त मत्त उज्जैन काम । बंचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत स्हर नपि तोन बंधि । आवत्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उत्तरिय । (२) ए. कृ. को.-कोदक ।

चालुक्क बीर गुज्जर नरेस। कित करै जुद्ध करनी विसेस ॥
थल वटिय वीर मझ्झिय हुजाव। रष्षंति सूर तिन मध्य आव ॥
छं० ॥ ५ ॥

सब सबर अरी चहु दिस नरिंद। तिन मध्य दन्द पृथिराज इन्द॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम। महि मंह काल सुभथान ताम ॥
छं० ॥ ६ ॥

तिन बरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज मंडन सु बीय ॥
बंच्यौ सु राज कग्गद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान ॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल ॥
देवास धीय देवास व्याह। मंड्यौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल वत्त चल्लै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती संसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै बत्त। संसार सार गल्हां निरत्त ॥
इह काच पिंड [1]संची सु बत्त। जै है सुजोग जोगाधि तत्त ॥छं०॥१०॥
जै है सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्टिये मान सो बिनसि सार ॥
वापी विरष्य सर मढ प्रमान। मिलिहै सु सर्ब सगतिस्स आन ॥
छं० ॥ ११ ॥
छंडो न बीर देवा सु सुष्य। रष्यौ सुमंत गल्हां [2]पुरुष्ष ॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधींच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त ॥ गल्हां काज सु देव। अस्ति दद्धीच दीय बर ॥
गल्हां काज सरुष्ष। बज्ज किन्नौ सु इंद्र जुर ॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को.-पुरिष्ष।

गलहां काज नरिंद । बंस दुरजोध मान रषि ॥
गलहां काज सु धात । मान [1]अहत्ति भूमि भषि ॥
रष्षिहै नरन गलहां सुबर । गलहां रष्षै न्रपति उष ॥
जयचंद बंध दल बल सकल । सबर [2]साँइ किज्जै सरुष ॥ छं० ॥ १३ ॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ।

दूहा ॥ इह [2]परतग्या नरिंद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

त्रोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धरं । दरबार बिराजत राज भरं ॥
चढ़ि चम्मर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनँदियं ॥
छं० ॥ १५ ॥

न्रप लज्ज न्रपत्तिय सारँगयं । सभ पुज्जिन सामँत ता बरयं ॥
अतताइय अंग उतंग भरं । सिव सेव कियैं तन फेरि धरं ॥
छं० ॥ १६ ॥

नर निढ्ढुर एक नरिंद समं । कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥

छिति रष्पन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंत्रिय राज दरं । अरि अंग [3]उछाहन बीर बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मझ्झ विराजत पंग भरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

चावंड नरिंद सु पंग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उतंग पलं । बय देहिय आनि सुबाहु बलं ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ. को.-साइ । (२) ए. कृ. को.-परतं ग्यान । (३) ए. कृ. को.-उछाहनै ।

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं। कर पाइ सु अंषय हथ्थ तनं॥
लरि लोह लुहानय कित्ति करं। अरि वाइव धूर ज्यों पत्त [2]ढरं॥
छं० ॥ २१ ॥

भजि भोंह चंदेल सु षेल षगं। धर धूसन भुंमिय जंपि जगं॥
दिवराज सु बग्गरि बंध बियं। जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्दिग बाह पगार बली। हरि तेज ज्यौं रोर फटंत षली॥
नरनाह सु कन्ह का कित्ति करीं। भर भीषम भारथ सुद्धि धरीं॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै। तिहि नाम सुने अरि अंग कपै॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं। तिन कंकन बंक बियं ऋमयं॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं षग भ्रम्म बली। जिन कित्ति दिसा दस बद्दि चली॥
षड गुज्जर राम नरिंद समं। जिन [3]कंदल रुद्धि उठंत श्रमं॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग्ग लियौ। भर भट्टिय भान भयंक बियौ॥
रघुबंसिय राम सुरंग बली। कनकू जिन नाम नरिंद कली॥
छं० ॥ २६ ॥

बर राम नरिंद नरिंद समं। तिहि कंदल उट्ठि रुधं सु जमं॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं। घरि द्वै भर उट्ठिज बूंदं भरं॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवत्ति अराधन न्याय करै। रघुवंसिय किल्ह नरिंद बरै॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं। ....॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ। धर मंडव मुंड षका बरत्यौ॥
पांवार सलष्ष सु पुच बली। न्रप जैत सजैत कि किसि कली॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-इक रंग सुरंग। (२) ए. कृ. को-धरं। (३) कृ.-कंकानि।
(४) ए.-मंडिय।

सु चलै बर भाइ 'दुभाइ भरं । तिनं सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू न्रप 'धावरयं। जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तम 'तूंअर नेत चिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम धरं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयौ जयं सह पुंडीर बली । जिनकै भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु षीचिय षग्ग बली । चमरालिय कित्ति नच्यंद हली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अल्हनयं । भजि भारथ कंभज किल्हनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति बली । बर चालुक चार नक्षच हली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

पंरि पारथ कन्न कुँवार न्रपं । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग षंडिय 'छिचिय छित्त रनं । सब सामंत सूर समोह तनं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

हंकारि उभै न्रप पास लिए । समतम्मि सु मंचिय मंच किए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अंतय आतप छच धर्यौ । कनकाबलि मंडिय मंडि हर्यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोधय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंमल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सक्रय बक्रय बुद्धि नरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनों छबि मेरय भान फिरं ॥
बर 'सेंगर सूर कल्यांन नमं । जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो.-सुभाइ ।   (२) मो.-धीवरयं ।   (३) ए. कृ. को.-तूँअर ।
(४) ए. कृ. को.-छत्रिय ।

जयचंद्(१) जँघारय नाहरयं । न्रप राज सु रष्षन साहरयं ॥
भकवान महीपति मीर बली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥
छं० ॥ ३९ ॥

कठ हेरिय सारँग सूर बली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुत्र राव हमीर बरं । छिति पत्ति कँगूरह सूर गुरं ॥
छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं । भर भारथ जुग्गिनि पांच करं ।
गुरराज सु कन्हय जन्म जिसौ । मग बेद चलंतहं ब्रह्म इसौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह से सकसैन बरं । प्रथिराज चढ़ंतह बाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं । बजि बंब कि अंबर घुम्मरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

झननंकत षग्ग फरी धरयं । भजि डंक ज्यौं डक्कृत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं । जनु छुट्टि जलद्द विहद्द भ्रमं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

चलि मल्लन हल्ल ज्यों रोस रसै । जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे ॥
हथनारि सुधारि कें कंक षगी । धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥
छं० ॥ ४४ ॥

कमनैत बनैत कि नेत धरं । मँडि मुष्ठि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं । सु मनौं घन फुट्टिय अग्गि भरं ॥
छं ॥ ४५ ॥

सब सेन सभा इह व्रन्न कहै । बरषा रुव संत दै छब्बि लहै ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना।

दूहा ॥ जो बुल्लै सामंत सथ । तौ 'चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद कौ । अरि बंधौ सिरताज ॥ छं ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना।

(१) मो.-भो ।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत। स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौ मंचह गुन ग्यान। धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु भ्रम्म [1]उवरत्त। बीर चड्ढौ परिमानं ॥
ज्यों गुरु बलहुअ विदुष। तत्त सोई करजानं ॥
सा भ्रम्म चिया अग्या न्रपति। मान मोह जानै न अंग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। सबल बीर चल्लेत संग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ बल। गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ। सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन।

त्रोटक ॥ सोइ सज्जिय सूर नरिंद बलं। छिति धारन को छिति छच कलं ॥
मति॰ मंच बरष्षय सूर बरं। धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
छं० ॥ ५० ॥
आहत्त अहीर करै बलयं। सुरष्यौ गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै बलबीयु अहत्त भरं। न्रप राज सु [2]कंठिय कंठ गुरं ॥
छं० ॥ ५१ ॥
हरसिंघ महाबल बंधु बियौ। बरसिंघ बली अरि छच लियौ ॥
बर जद्दवं जाम जुवान नरं। जिन कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
नर नाहर टांक नरिंद नमं। तिहि कंठ अरी धर भ्रम्म तमं ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज बरं। मद मोष बिछुट्टिय काल भरं ॥
छं० ॥ ५३ ॥
परषत्त सु पल्हन अल्हनयं। भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं ॥
बर तूंअर रावति बान बली। जिन क्रित्ति कलाधर भ्रम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो.-उरवत्त। (२) ए. कृ. को.-कैंठय। (३) ए. कृ. को.-पंचमुष्षव बार।

बर बीर. कंठी पुरसान रनं। इथ चीय अहुठ्ठपती सुभनं॥
कंठीर कलंकत जैत बली। जिहि ओटत जंगल देस भली॥छं०॥५५॥

न्टप रूप नरिंदति वाहनयं। पुरसान दलं पिति सा हनयं॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। पित की पित कंध परै न धरं॥
छं०॥५६॥

जनएस गुरेस सबंध बली। जिहि निढ्ढुर उप्पर पंथ पुली॥
परसंग पवित्र पवित्र छती। पुरसान दलं जिन सुद्ध मती॥
छं०॥५७॥

अवनीस उमाह तुरंग तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय घनं॥छं०॥५८॥
महनंग महा मुर नैंन समं। तिन राज सु रष्यिय जित्ति क्रमं॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु भनौं कल जोति सरीर बढ़ी॥
छं०॥५९॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन आनत मोद मयं करिकं॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी बिरदावलि जंपि फुनं॥
छं०॥६०॥

सत मैं षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं॥
छं०॥६१॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त॥ निढ्ढुर स्हर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं॥
जिपड़ जैत जैसिंघ। सलष पावारति स्हरं॥
जामदेव जद्दव जुवान। भारथ्थ पत्ति सिर॥
बर रघुबंसी राम। द्रग्ग महिं कौन तास बर॥
बर बीर्य रक्त पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि॥
मधि मद्धि मुहूरत इक्क बर। अरि बर गन रुंधहि भिरहि॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परै।

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अंकूर बीर रस॥
सज्जि भली नकपत्त। अंग लग्गे सुभंत तस॥
[2]राजस तम सातुक्क। साष अग्गै अधिकारिय॥
जथ्य कथ्य आरुहिय। रत्ति ढिल्लीपति धारिय॥
जंगलू देस जंगल न्रपति। जग-लेबै बर सूर घट॥
षुरसान षांन उप्पर चढ़िय। बर बीर रस बीर पट॥ छं०॥ ६३॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान बीर रस॥
सामंता सतभाव। पंग उप्पर कीजै कस॥
पंच घटी सौ कोस। राज अग्गं ढिल्ली तँह॥
साम दान अरु भेद। दंड निर्नय[3]साधौ जँह॥
मन बच क्रम कह कह कह्यौ। अलप न सुर सद्दय सुघट॥
दुजराज संधि गुरराज कौ। सज्जि महूरत चट्टिपट॥ छं०॥ ६४॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

त्रोटक॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिबिबं न्रपं। ससि राज इकं प्रति ब्यंब पयं॥
प्रतिब्यंबह मभ्भ इकंत उभै। चहुआनरु सामंत सूर सुभै॥
छं०॥ ६५॥

दिस राकय अर्कय थान बियौ। तम भंजित तेज सु राज लियौ॥
सीइ लच्छि हयग्गय मंत षुली। रवि की किरनावलि तेज डुली॥
छं०॥ ६६॥

पर पष्षर स्याह तुरंग रनं। सु मनों घन सोभत नैर तनं॥
सु विंचें विच राजत राज रती। सु मनों प्रतिबिंब किदेव किती॥
छं०॥ ६७॥

(१) ए. कृ. को.-"रौद्र भयानक रस"।
(२) मो.-राजत। (३) मो.-साधै।

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क मुष। न्नप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंच एकह बुले। वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना।

तिते स्हर तिहि रत्ति बर। ग्रेह सपत्ते बीर ॥
पंचमि बर बैसाष धुर। लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साधकर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रेहे सहूरं। मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावद्दिसि रंगं। मनों ¹घलह लिय मेघ असंगं ॥छं०॥७०॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना।

दूहा ॥ मेघ पंति वद्दल विषम। बल दंतिय सजि स्हर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्पियै। धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि बर। लिय कारन परिमान ॥
स्हर उगै सत पच ज्यौ। ज्यौं भद्दव बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन।

चोटक ॥ सुअं बर बीर सु चोटक छंद। छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवद्द। ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥छं०॥७३॥
घनंकिय संकर अंदुन अंद। जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छिती छितिपूर हयग्गय भार। दिसौ दिसि दिष्षहिं ज्यौं जल धार ॥
छं० ॥ ७४ ॥
ढरै दिगपाल सु अठ्ठय मेर। भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छचिय सद्द निसान। दिसा षुरसान सु बद्ढय पान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

मंहे मय मत्त [1]गहम्महराज। उठै बर अंकुर मुच्छ विराज ॥
कहै कबिचंद सु उप्पम ताहि। मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

[2]अपें प्रथिराज समप्पय बाज। तिनें दिषि पंतिय प्रब्बत लाज ॥
दुअं दुअ बंधि रकेबन जोर। चढ़े बर छिचिय सूर भकोर ॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयद्दल पंति सुभंतिय ठांनि। मनों बगपंति घनी घट बांनि ॥
मयं मंथ रुद्र सु रुद्रय सार। भयौ जनु अंत प्रलै दुति वार॥छं०॥७८
डहडुह बज्जय डक्कय मात। डलै तिन बीर गिरव्वर गात ॥
सु दिष्षन वांम फुरक्कय नैन। चल्यौ जनु बीर परब्बत बैन ॥छं०॥७९॥
इसे दोउ बीर विराजत रिंघ। गुफा इक मभ्भ मनों दुअ सिंघ ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर। कही कविचंद सु उप्पम पूर ॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कंतहि चीर। उठ्यौ तहां जित्त भयानक बीर ॥
लिषे लिष चिचय दंपति बैन। मनों पलटै दिन चाचिग नैन॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान। किधों चकई सुपसुक्कय मान ॥
भयौ मन बीरन बीर प्रमान। भयौ करुना रस तीय प्रमान॥छं०॥८२॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल। मनों दुअ पास हलंत हिडोल ॥
दोऊ मभ्भ रष्षय सूर सनूर। भजै करुना रस काइर पूर ॥छं०॥८३॥
मिले न्विप आइ सु ढिल्लिय थान। कहै कविचंद बषान बषान॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ स्वामि ध्रम्म सों [3]सुद्ध मन। ज्यों [4]बांबी दिसि [5]सप्प ॥
स्रग विषांन ज्यों अरिन बर। जगि बीरा रस जप्प ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंशा वर्णन।

(१) मो.-गहम्मग। (२) कृ. को.-अपं। (३) ए. कृ. को.-जुद्ध।
(४) को.-बाबी। (५) ए. कृ. को.-सर्प।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु बीर । जग्गि चयनेत अग्गि सिव ॥
कै मचकुंद प्रमान । गुफा बारुन सु दैत्य लिव ॥
कै [1]जग्यौ भसमास । दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत । बीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनौ न न्रपति किन निरति बर । किहु न सुनौ जैचंद क्रम ॥
बग्गं उपारि धाए बलिय । अभिलाषह भारथ्य श्रम ॥ छं० ॥ ८६ ॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलाषह श्रम गर्व । भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यौं नल मति दमयंत । सेन सज्जौ रन पूरं ॥
भवर सद्द सम सुमत्त । प्रेम रस छुट्टिय जंगं ॥
सुबर राज चहुआन । करन उप्पर बर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजौ । रंजिय सूर रंजित सुभर० ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिग । दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन ।

मोतीदाम ॥ दसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार । चल्यौ जनु इंद्र धनुष्षह धार ॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस । परक्खिय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८ ॥
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ । कहै कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सुसथ्थय बीर । रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनौं कुत कुंतय बारय षुल्लि । गए मनु आरद शंकर भुल्लि ॥
करुना रस केलि कमीनह बीर । नच्यौ अदभुद्द सु रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर । दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानरु हिंदुअ बीर प्रमान । सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जग्या । (२) ए. कृ. को.-छित्त । (३) मो.-छिपग ।
(१) ए. कृ. को.-मध्यय ।

दया बर हीन सगप्पन नथ्यि । .... ॥
उमा कृत काज प्रजापति दच्छि । तज्यौ ननं मात उरग्गिय लच्छि ॥
छं० ॥ ९२ ॥

पिट्ठे सिर ईस पटक्किय जट्ट । भयौ तहां जन्म सु बीरय भट्ट ॥
भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार । पछै दछि दच्छिय दप्पि डचार ॥
छं० ॥ ९३ ॥

इतं मिति मंत सु कंतिय राज । भयौ बर बीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ । बज्यौ रनतूर रवद्दय एछ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

मल्ली जनु जंगम जो गवरीस । दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
तज्यौ जहां मान लगी पिय कंध । नयौ रस संत सु मंतिय संध ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सु जाति जरा न्रप हक्कि प्रमान । चढ्यौ तिन बेर बली चहुआन ॥
छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना ।

कवित्त ॥ चाहुआनं बर बलिय । भार भारथ रस भिन्नौ ॥
मधुर सुधर सिंधुरस । अंग चावद्दिसि छिन्नौ ॥
सुबर सेन सामंत । सुबर बल बीर निनारे ॥
मझ मझझह आवत । देव जनु जुद्ध हकारे ॥
कुसमिस्त जुद्ध देवह करन । रथ्थ सुरत्थ हय हयति नर ॥
सामंत स्रर पुज्जै नहीं । वर कंदल उट्ठै ति धर ॥ छं० ॥ ९७ ॥

सामंतों की वीरता का वर्णन ।

उरग विंद रवि उठै । सीस हक्कै धर नंचै ॥
देवांसुर संग्राम । देव पूजा देवंचै ॥
इंद्र जुद्ध तारक । सोइ तत्तह अधिकारी ॥
पंच पंच पंडव सु । भीम दुर्जोधन भारी ॥

गज मंत दंत कट्टै सु भ्रत। दैवत्त जुध सामंत रन ॥
उद्दयो जुद्ध आहित मिति। नहिन मेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि जाइ मिलै थर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन न्रिमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
षिन मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥
कह निढ्ढुर रट्ठौर। सुनहु साभंत प्रकारं ॥
कहौ देव कौ भ्रम्म। कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
बारि बूंद बुदबुद्द। हथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बहलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु काम के। अंत चित्त रुदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥
अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब भ्रम्म संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जंजं बधै। तंतं बुड्ढि पुरान बर ॥
न्रिघ्घात घात पत्तिय सु वर। सु हत काल निच्चरि सु नर ॥छं०॥१०१॥
स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि बंछौ मरन। भीर संकरैं निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग। छंडि इह मंच सस्वगह ॥
अस्ति काज दद्धीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बैलि कै। चढ़हु भूमि घर रुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रेहं । के के न काल संग्रहे हंतं ॥
मंचौ जा प्रथिराजं । रष्षे जा बीर सो सस्त्रं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी ॥
[1]ता भग्गा मन सूर काइर बरं, [2]किल किंचि किंचित रसी ॥
अभिलाषं छिति गर्व तारुन विधे, संसार सहकारयं ॥
वारं जा पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा । तिनै धावतैं होइ मारुत्त पंगा ।
झमै झुंम अग्गै सुमं तीन संधै । मनौं ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै॥
छं० ॥ १०५ ॥

पुजै पंष्र अंषी मनं पौन धावै । तिनं उप्पमा कौंन कविचंद लावै ॥
किधौं [3]कैसपन्नं चलै चित्त भारी । किधौं चक्करी हथ्थ [4]आवत्त तारी॥
छं० ॥ १०६ ॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै । ष्गगंराज कैसै उपम्माति लावै ॥
अगंपाइ दीसे सुषं मेह कारै । मनौं दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै ॥
छं० ॥ १०७ ॥

धरे पाइ बाजी हढ़ंतं निभारै । मनौं तार सौं तार बज्जै हकारै॥
तिंनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे । मनौं तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥
छं० ॥ १०८ ॥

इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं । दिषै सूर सामंत हथ्थें सुपाजं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

दूहा ॥ बाज राज नृप राज दिय । बिलसि विधान विधान ॥
तिन उप्पम कबिचंद कहि । का दिज्जै धपबान ॥ छं० ॥ ११० ॥

(१) मो.-ना । (२) ए. कृ. को.-कल ।
(३) ए. कृ. को.-दीसंत । (४) ए.-गज ।

घोड़ो की शोभा वर्णन।

रसावला ॥ धपै बान भारै, हकारे निनारै। दुरै अप्प छाया, तते अग्गि ताया॥ छं० ॥ १११ ॥

धवै [1]अंठ भारी, मुकोटं निनारी। बरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥ छं० ॥ ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा। उरं पुट्ठ भारी, [2]सु मासं निनारी॥ छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं। नयं डंड इद्वं, मनो डंड सिद्धं॥ छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर डुल्लै, कवी कित्ति षुल्लै। मनों वाय कांडं, परौ मभ्भ होडं॥ छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं। अवत्तं निनारे, मनों स्वामि सारें॥ छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी। सु हैं हैं रकेबं, चढ़े बीर [3]बेबं ॥
सुरत्तान पासं, चल्यौ बीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त ॥ चल गोरी सुरतान। जाइ रुंध्या रन अग्गै ॥
हय गय रथ नर सज्जि। बीर पावस घट जग्गै ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय ॥
चाहुआन सुरतान। बीर जै पत्त करारिय ॥
डमरू डहकि जुग्गिनि हसै। जिम जिम बंबर धज लसै ॥
सामंत सूर चहुआन सौं। बीर बिदुरि सस्त्रह कसै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंसं। (३) ए. कृ. को.-बेबं।

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना।

म्लेछ मह्हरति सत्ति। मत्ति कीनौ रत भारी॥
वीरा रस विद्धुरिय। लोह लग्गी अधिकारी॥
छित्ति मित्ति छिति सोभ। अंषि आवै न अंषि घिन॥
ज्यौं नद्दव वन दिष्ट। चंपि चूवंत मंत घन॥
रन हरषि वरप्पिय मुक्ति जिहि। धप्पि लोह कोहां करास॥
चावंडराइ दाहर तनौ। न्रप अग्या विन अग्र धंसि॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर आक्रमण करना।

रा० चावंड जैतसी। लोह आजानबाहु बर॥
रष्षे रन सुरतान। मत्त लग्गे सुबीर भर॥
पंच कोस न्रप छंडि। आप रुंध्या सुरतानं॥
वज्र घाट वज्जीय। आइ लग्गा सु विहानं॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर। उरसि लोह लग्गा लरन॥
तत्तार षान षुरसानपति। अप्प मह्हरति मरन मन॥छं०॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना।

भुजंगी॥ षुरासान पानं सु तत्तार बीरं। मनों वज्र देषे सु वज्रं सरीरं॥
महा बाहु वैज्री कढ़े वज्र हथ्थं। लगे अंग अंगं निरंथ्थे निरथ्थं॥
छं०॥१२२॥

छुलिकां सु बानं कमानेन साही। इसे हूर बेगं षलंलै न्रिबाही॥
उरं मत्त मत्तं विमत्तं निनारे। मनौं देषियै बीर रत्तं प्रकारे॥
छं०॥१२३॥

(१) मो.-मनह। (२) मो. नैत्रिवाही।

उरं क्राल कांली जमं दड्ढ कड्ढी। किधौ दंढ्ढ जम दढ्ढु जम कर विडड्ढी ॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती। परें रंग चंगं छके जानि गत्ती ॥
छं० ॥ १२४ ॥
दुवं हिंदु मेच्छं तसब्बीति नंषी। सरै सट्ठि हज्जार आहत लष्षी ॥
तिनें हथ्थ हथ्थं मुकत्ती प्रमानं। मनों देषि देवंत देवाधि थानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे। भए अंग अंगं तही तथ्य सारे ॥
नचै कंध बंधं कवंधं दुरंगी। मनों बीर आहत भारथ्य रंगी ॥
छं० ॥ १२६ ॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमै सार घुम्मैं मनो मत्तवारे॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा ॥ चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जैनिय रंग ॥
आइ साहि जग हजूरन। लयै सहायक पंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्ज्यौ म्रिच्छ ॥
नर चित्तन इच्छै कछू। ईसर औरै इच्छ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै ॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै ॥
रचै रचन नर कोटि। जोरि जम पाइ बस्त सह ॥
छिनक मध्य हर हरै। केल किर तष्ष क्रम्म दह ॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडिं जिय ॥
अनचित्ति जग्गि गज्जन बलिय। आनि उतंग सु कंक किय ॥
छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों बावन बलि पास। आनि अनचिंत्य छलन किय॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय॥
दसों दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु॥
मीर मसंद ससंद। बान बहु बूंद बरषि घन॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन॥
प्रलै काल हाल पिष्षिय निजरि। मनों मिच द्दत्ती करन॥
छं० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला ॥ कोह लग्गे पलं, सार उड्डै पलं। अंत तुट्टै रुलं, पग्ग वेली तुलं॥
छं० ॥ १३२ ॥
नैन रत्ते भालं, जुट्टि जाल पलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं॥
छं० ॥ १३३ ॥
रुंड भच्चै दलं, मुंड वक्कै वलं। गिद्धि सिद्धी कलं, वज्जि कोलाहलं॥
छं० ॥ १३४ ॥
छिंछ उड्डै ललं, जानि तिंदू झलं। हथ्थ तुट्टै नलं, द्दप्प साषा ढलं॥
छं० ॥ १३५ ॥
पंम पंषी बलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, हड्डि बुंदै भरं॥
छं० ॥ १३६ ॥
जानि नग्गं परं, चंडि पचं [3]भट्टं। [4]मंति डक्कं डरं, भूत नच्चै परं॥
छं० ॥ १३७ ॥
उभ्भयं चिक्करं, बक्कि नैरु हरं। कंपि स्यारं नरं, सूर बढ्ढै बरं॥
छं० ॥ १३८ ॥
भभ्भर झारै हूरं, ... छं० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

(१) ए. कृ.को.-दीय। (२) ए. कृ. को.-दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
(३) ए. कृ. को.-वरं। (४) ए. कृ. को.-मन्नि।

दूहा ॥ सार मंत मत्ते सुभट। षग ढिल्लै गज ठट्ट ॥
स्वामि ध्रम्म सद्दै रनह। मुकति सु भ्मारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बलवर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कप्पि जिसि ॥
हय दल बल उच्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली महि मध्य। कढ्ढि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं। बहत सूर सामंत रिन ॥
कलि कहर कंक बक्कहि विहसि। गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुसलमानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्षं। कले कंक बक हीन जीवं सु लष्षं।
यलं कंन्ह गोइंद कोका प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [2]थानं ॥
छं० ॥ १४२ ॥
बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै ॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों वीर भारथ्थ आहुत्त रंगी ॥
छं० ॥ १४३ ॥
लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंच्यौ षुरासान षानं ॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षियै छेट पष्षे करेजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥
हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु र्षोपरि पुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि वीर भए है निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

---

(१) मो.--तसब्बीनि। (२) मो.-पानं।

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥
तहन सुष्ष दुष्षं निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ मोहि कोह रस पान । बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
तबल तुंग बजि जंग । बीर लग्गे सु बीर कसि ॥
जा दिष्षि सुरतान । नैन बड़वानल धारी ॥
प्रलय करन करवान । प्रलय इन षग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्हय रनह ॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर । गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं० ॥ १४७ ॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साहब बाहन बिरद । साह गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विछ्छरहि । रोस उछ्छरहि बीर भ्रम ॥
बजहि षग्ग आवत्तं । जूथ उड्डहि असमानं ॥
मनहु सिंघ गुर गज्ज । हक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरि विहसि सन्नाह भर । भर भर भिरि असिवर बजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा । निसा नभ्भ विज्जुल लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥

रननंकय नागय बीर सुरं । मनौं बीर जगावत बीर उरं ॥
छिति छत्र दुहाइय छत्र धरं । सु मनौं बरवा हवि वज्र झरं ॥
छं० ॥ १५० ॥

छितिं सोहत श्रोन अपुब्ब रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं॥
दोउ दीन विराजत दीन उभैं। रँग रत्त रमैं छिति छच सुभैं॥
छं०॥ १५१॥

सुमनों मधु माधव रीति इलै। सुजनो छत कंकर वीर फुलै॥
इक अंग विमंगन हथ्थ चरै। सु मनों कल बीर कला दुसरै॥
छं०॥ १५२॥

मिति मत्त अहत्तन घाइ घटं। सु नचै जनु पारथ बीर भटं॥
छं०॥ १५३॥

कवित्त॥ बरकि बीर भट सुभट। झुम्मि हकै चावद्दिसि॥
इक इक आहत्त। बीर बरषंत मंत असि॥
नचि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि॥
सार ताल वेताल। नंचि रन बीर डकारहि॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि बीर लग्गं सु बर॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर॥छं०॥१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव बाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्र भर।
इन बज्जै असि बरह। सार बज्जै प्रहार धर॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी॥
मनु कढ्ढी जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी॥
चालुक्क चंपि चच्चर कियौ। सार धार सम उत्तर्यौ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करौ सु कोगुन विस्तर्यौ॥
छं०॥ १५५॥

दूहा॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आहतह तिन नैन॥ छं०॥ १५६॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रसंसा वर्णन।

कवित्त॥ अद्ध कोस न्रप अग्ग। सूर रोपे पग गढ्ढै॥
सद्द मद्द गजराज। चंडि धढ्ढै बल चढ्ढै॥

लज्ज बंध संकरिय। बीर अंकुरिय दिट्ट रन॥
सार धार बज्जी कपाट। न्रिघात घुमत रनं॥
कलमलिय कंक इम मिच्छ सह। जनु लुअ लग्गत जेठ महि॥
जद्दव सु जाम घरि इक्कलों। जनु बडवानल चंद कहि॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा॥ दिष्षे मुष्षय मच्छरयं। अरज दुवं सन्नाम अवनयं॥
अच्छरि वर कार इच्छं। भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं॥छं०॥१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त॥ मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि॥
चंच पीप परिहार। कन्ह गोइंद नयन सरि॥
कंठ चंद पुंडीर। पांव जुग जैत सलष सजि॥
निढ्ढुर भर बलिभद्र। पंष बजि बाय तेज गति॥
सम पुंछ और सम पुंछ मन। बरन बरन छबि सिलह तन॥
रन रोहि रच्यौ प्रथिराज महि। गिलन अप्प सुरतान रिन॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा॥ मुच्छीजं वर मच्छरं। तं वटे अच्छरी अंगं॥
सौयं साध प्रमानं। सा पूजी सूर सामंतं॥ छं० ॥ १६० ॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त॥ कर बल षान ततार। षान न्याजी षां गोरी॥
हरवल [3]पीप नरिंद। साहि बंधी बिय जोरी॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह संधारै॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल बड्डा उच्चारै॥
छत अछत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ॥
सुरतान सूर आहत्त वर। धन्नि सुबर सामंत भुअ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए.-फरत। (२) ए. कृ. को.-गैन। (३) ए. कृ. को.-अप्प।

तन तरफत धर मिच्छ। वला छबि जानि नटक्कँ ॥
मत्त दन्ति आरुहैं। दंत सौ दंत कटक्कँ ॥
समर अमर करि वंदि। भये विस्मत पल चारिय ॥
जहँ तहँ चंद पुडीर। चंद ज्यौं रैनि उजारिय ॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम। भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल। महन रंभ मच्यौ सु धर ॥ छं० ॥१६२॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना।

हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद। कल विकल कल हत चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान। चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक। मनौं मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस। सेन उभ्भै चावद्दिस ॥
रत्तिवाह सम जुद्ध। बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सस्त्र। रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
सार धार निरधार। बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक करक्के रंक पल। निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरैं। सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुसलमान फौज का पैर उखड़ना।

अद्ध होत बर रत्ति। साहि गोरी धररुंध्यौ ॥
तोंअर बर पाहार। कित्ति सा सिंधुह संध्यौ ॥
सेत बंध बंध्यौति। सूर बंध्यौ रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार। धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर। तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि। सुनि झंपै बर हयति हय ॥ छं० ॥१६६॥

(१) ए. कृ. को. हारिय। (२) ए. कृ. को.-भर।

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना।

दोत होत मध्यान। पीप नें पन मन मंड्यौ ॥
प्रबल पानि परचंड। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
सेत बंधि ज्यौं राम। चंद सुर भान ह्रर सधि ॥
यौं लिन्नौं परिहार। बालि दस कंध कंध मधि ॥
रन छंडि हंडि धर मच्छि हुअ। लाजवंत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जपैं मुष धर अमर। सु कविचंद कवितह धरिय ॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ पऱ्यो राव तिन वेर खीची प्रसंगं। जिने षंडियं पित्तषल षग्ग अंगं॥
पऱ्यौ राव पज्जून पुत्तंति राजं। गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धक्कै अजमेर राई। दुअं सेन जंपी सुषं कित्ति चाई॥
बधं जामदेवं बधौं बीरभानं। लरी अच्छरी मझ्झ बीरं बरानं॥
छं० ॥ १६९ ॥

पऱ्यौ घाइ षेतं अतत्ताइ तातं। मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं॥
पऱ्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं। हयं अट्ठ भग्गं सु उट्ठे कमंधं॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे। दिषे थान थानं मिळं प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ इन परंत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट बीर ॥
तिन जस जंपत का कबी। जिन करि जज्जर श्रीर ॥छं०॥१७२॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिनं दान। पान पग्गह पल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग। जै जै जै जस लद्धयौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उब्बरै। सुनौ मंची अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। दूटं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुच्छ सोमेस सुअ। भुअ समान संभरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चढ्ढई। धर पद्धर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर बज्जे नौसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजीक निसान। जौति लीने सुरतानं ॥
गो धर ढिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा अम्म धारि छची न्रपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कौं। मुष अयन्न पारथ्थ गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल विक्ते सुभर। कोलाहल अरि गात ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान। सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान। इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ। इक्क बंधे बस किज्जिय ॥
इक्क अप्प पहराइ। मान भजि रूमन दिज्जय ॥
आवै [1]न पार लच्छी सहज। पट्ट बरन सुष्षह रुगन ॥
चहुआन सूर संभरि धनी। तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥

अथ करहे रो जुद्धं प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस वित्ते न्नप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मंझौ न्रपति । आषेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीमं प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सट्ठि । हूर [2]सामंत [2]सु सथ्थं ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥
बल संमर जो गट्ठ । गाहि चहुआंन [3]जु सीमं ॥
सगैपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम बर न्नपति ॥
संभाग समंर सुनयौ समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुबर बीर चिंतै न्नपति । बर बरनौं दुति काज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छबि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र सुंदरी नाम । बीय इंद्रावति सोहै ॥
बर समुंद पांवार । धरिग अति सम संग लोभै ॥
मनमथ्थ मथनं नरिंद । हाइ करि भाइह गाढ़ी ॥
[4]रूप तरंग झंकुरित । तुंग दोऊ करि काढ़ी ॥

---

(१) कृ. ए. को.-कितेक, केतत, फितेक । (२) मो.-जु ।
(३) मो.-सुसीमं । (४) ए. कृ. को.-रुअत अंग, अँग ।

ज्यों छित्ति काम जंप्यौ परित। अति सुदेह न्रिम्मल भलकि।
संकुच सु काम कर [1]कलिय तिंहि। [2]रिपु सुदेख आयौ ललकि॥
छं०॥ ४॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा॥ श्रीफल दुजबर हथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि बर भोम दिन। लगन [3]करै परमान॥ छं०॥ ५॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर न्रपति। क्रिहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [4]विधि। [5]कहि कहि सुमति विचार॥छं०॥६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया॥ वय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न बनै सु बाम॥
सारद मुष उच्चारती। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद मुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [6]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
बलि सरूप सज्जी मदन। सुभ सागर गुर मेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज बलेव॥ छं०॥ ७॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन। [7]दुरि दुरि श्रवन सु हित्त॥
जिम जिम दुजबर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं०॥ ८॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

(१) मो.-कर लीय। (२) ए. कृ. को.-फेरिपुं देख।
(३) मो.-करइ। (४) ए.-बुध।
(५) ए. को.-क्रिंहि क्रिंहि। (६) ए. कृ. को.-भरै।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि।

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप । बर बाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि संधि सैसव पाल । अजुं अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु सूर समान । वय चंद [2]चढ़न प्रमान ॥
सैसव जोवत एल । ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भौंह भँवर प्रमान । वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग । सावक्क रुग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
बिय द्रिगन ओपम कोड़ । सिस भृंग षंजन होड़ ॥
बर बरन नासिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिषा पतँग नसाव । ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल । झँप देत षंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
बिय बाल जोवन सेव । ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसंधि संधि अचिंद । ज्यौं मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचंद । .... ॥
तुछ रोम राजि विसाल । मनों अग्गि उग्गिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर । मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह । मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न थक्कत तेहं । जा जनक न्रप कर देह ॥
वैसंधि कविवर वंधि । ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसंधि संधि [3]समान । ज्यौं सूर ग्रहन प्रमान ॥
वैं राह ससि गिलि सूर । चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह । सिकार काम करेह ॥
लज.कारे लज लजि छंडि । चित रंक दीन समंडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहौं बर नाइ । तो जंम अंत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान । तप तूंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

(१) ए.-रूप ।　　(२) मो.-चैढ़त ।
* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है ।　(३) ए. कृ. को.-प्रमान ।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव । रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी । बीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट । समर कग्गर बर धाइय ॥
बर गुज्जरवै राव । चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा । धर पद्धर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ बर । गढ़ उत्तरि [1]किरपान लिय ॥छं० ॥२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट बर । गो मेलान नरिंद ॥
छंडि सूर सिंगार रस । मंडि बीर बर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन । सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून । बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन । सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर । सथ्थ दीनौं नृप हामं ॥
आहुत अत्तताई सुबर । रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निद्दुर सुबर । मुक्कलि जैसिंघ पष्षलिय ॥छं० ॥२३॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ । [2]न्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास सँग । दाहिम्मों बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
सब सामंत सुसंग लै । लै चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कबिय [3]बष्षान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

चोटक ॥ प्रथिराज चढ्यौ सिर छत्त उपं । ससि कोटि रबी ज्यों नछित्त तपं ॥
गजराज विराजत पंति घनं । घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

(१) ए. कृ. को.-करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. बषान। (४) ए. कृ. को.-मनं।

हय पष्षर बष्षर तेज [४]तुनं । किननंकहि [५]धक्कहि सेस धुनं ॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं । घुरबान निसानन मेघ [६]भदं ॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं । मनु भद्दव बीज उपंम धरं ॥
* किरवान कमानन तान करं । हयनारि हवाइ कुहक्क वरं ॥
छं० ॥ २८ ॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं । दुतियं कहि भारथ पारथ यं ॥
छं० ॥ २९ ॥

(४) मो.-तुमं । (५) ए.-धर्काहि । (६) मो.-नदै ।

* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है ।

मोतीदाम ॥ दख्यौ न्त्रप बीर अनंदिय चंद । सु मुत्तियदाम पयंपय छंद ॥
दए न्त्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट । मिले सब आइस जंग न रिष्ट ॥
छं० ॥ ३० ॥
उड़ी षुर धूरि अछादिय भान । दिसा धरि अट्ठ न सुभ्भय [१]सान ॥
बजे घन सद्द निसान सुहद्द । लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द ॥
छं० ॥ ३१ ॥
[२]मुद्दे सतपच कमोदून षेरु । करे चतुरंगय संकिय मेरु ॥
दिगपाल पंयाल पुरं सरसी । तिनकै बर कन्ह परे धुरसी ॥
छं० ॥ ३२ ॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों । किल कंपहि तुंड जसं बर यों ॥
बिफुरै बर.हूर चिहूं दिसि यों । डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों ॥
छं० ॥ ३३ ॥
फन फूंक फनंपति को बिसरी । धरकें पय बज्जि षुरं दुसरी ॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं । तिनसों बर [३]पांति षगं उरझं ॥
छं० ॥ ३४ ॥
बर बज्जि तंदूर तहां तबलं । निसु नंन नवीनय बंस बलं ॥
जु धरैं बर गौर [४]उछंग हरं । सु कहै बर कंतिन कंपि डरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

(१) मो.-भान । (२) ए. कृ. को.-सुदे । (३) ए. कृ. को.-पंषियते ।
(४) मो.-उबग्ग ।

जु बज्रावत [1]डौंरुत्र डक्क सुरं। रन नंकहि जोग जुगाधि हरं॥
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं०॥ ३६॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना।

दूहा॥ सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन॥
बरद सौर संभय मिल्यौ। चिचंगी परधान॥ छं०॥ ३७॥
उत रावर सन्हौ मिल्यौ। चिचंगी परधान॥
कहो समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं०॥ ३८॥

कुंडलिया॥ मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुछि तीर॥
कहां सेन चालुक्क कौ। कहां समरंगी बीर॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं॥
करहेरा चिचंग। राज आहुट्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरिंजंम। हक्क उत्तर पद्धर चलि॥
गढ़ इत्तें दस कोस। समर उभ्भो समरं मिलि॥ छं०॥ ३९॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त॥ कहि चिचंगिय मंचि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [3]मंडोवर चुक्कह॥
चिचंगी चतुरंग। आइ अड्डो करहेरां॥
जुद्ध रुद्ध चालुक्क। हुए कोऊ दिन भेरां॥
हम दैन षबर तुम मुकलिय। कहौं कही मुष मुष्प रुष॥
प्रथिराज राज अग्गैं विवरि। कही वत्त परधान मुष॥ छं०॥ ४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-मोरे। (२) ए. कृ. को.-मंडहि बर।
(३) मो.-प्राति पतियां। (४) ए. कृ. को.-जंग।

न्रप बुज्झै चालुक। सेन कित्तक परमानं ॥
आइ ग्रह्यौ चिचंग। निरत दीनौ नन आनं ॥
छूर सुवर आइत्त। रीति रघ्घी विधि जानं ॥
इन अग्गै चालुक। वेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय। कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल। चंपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना।

चौपाई ॥ करि अग्गे लीनौ परधानं। आतुर ह्वौं चल्यौ चहुआनं ॥
दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं। समर सजन संमुह उठि धानं ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पावस रन प्रब्बाह। अभ्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिची छित्ति प्रमान। अभ्भ बद्दर उठि झांइय ॥
आलस [1]नींदय पीझ। सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन बुठ्ठनह। करै उद्दिम रन हामस ॥
शृंगार रंभ ग्रेहं बसह। औ कुलटा सुकबीय हुव ॥
कारन्न कित्ति औ काल मिसि। द्रवै इंद्र स्वरह सुलव ॥छं०॥४३॥

चालुक्य सेना की सर्प से उपमा वर्णन।

ज्यौं गुनाव गारडू। सेन चालुक मिसि साही ॥
विषमं जोरं फुंकयौ। सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ पग्ग जझ्झारि। सेन सज्जै चतुरंगी ॥
वान मंच मंने न। रसन कुंनन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि। निधि चल्ले मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन। पुब्ब दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन।

यह संभरि चहुआन। बीर पारधि घरि आइय ॥

(१) मो.-नीदरुपीज।

दुहूं निसान बजि समुह। भूमि पुर कंपि हलाइय॥
बीर सिंघ आहुट्ठ। बीर चालुंक मुष साहिय॥
पुच्छ मग्ग चहुआन। दुहुन बर बीर समाहिय॥
उत्तरिय मनों सामुद्द तहि। उदित दीह मंगल अरक॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि। अष्ट-कुली बंछै मुरक॥ छं० ॥ ४५ ॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ चालुक्कां चहुआन दल। भई सनाह सनाह॥
दोउ सेन कविचंद कहि। बरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना।

मोतिदाम ॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ। परे बर बीर निसाज्जन घाइ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क। मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क॥
छं० ॥ ४७ ॥
अछादि अरुन्न न सूझत भक्ख। करें किधों सोर कपी बर गरुद्द॥
गहब्बर बैंन उचारत श्रोन। इहै जुधकार प्रकारय द्रोन॥
छं० ॥ ४८ ॥
धरं गज आगम नीम अउड्ड। छुटे बर पाइक फूलय रुड्ड॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान। विचैं गुथि मोति कुहक्क (१)अचान॥
छं० ॥ ४९ ॥
दुहूं बिच नग्ग मगं नग पंति। परी तहां पट्टनराइ मपंत॥
जु भाल अंक्कुर सु सुंदप बिंद। धरी हयनारि छतीसयं चंद॥
छं० ॥ ५० ॥
कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि। तिठौहर बंध नरिंद सु बंध॥
लरं सधि ब्रह्म सु चालुकराव। दिसं बुलि भट्टिय दक्खि न काव॥
छं० ॥ ५१ ॥
दिसि वाम जवाहर मेर अराव। रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप। तिन में बर छीन सुरंग अनूप॥
छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-अवान।

पसरी बर क्रन्न सनाह न तीर । अधवै उत कालिय के रुचि पीर ॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ चालुक्कां चित्रंगपति । मिले दिष्टि दुअ दौरि ॥
मनों धुन्न पच्छिमह तैं । उड़ि डंबर इल सौर ॥ छं० ॥ ५४ ॥
[1]इत चंप्यौ चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
आइ राज उप्पर करन । बज्जि निसानन घाव ॥ छं० ॥ ५५ ॥

कुंडलिया ॥ ढाल ढलकि दुअ सेन बर । गज पंती हलि जुथ्थ ॥
मनों मल्ल आरुद दोउ । तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ । राम अवनी अन पिष्षे ॥
दुहुन दिश्र अंकुरिय । पाज बंधन बल दिष्षे ॥
चंपि सेभ चालुक्क । बीर भ्रम सों बर मिल्ले ॥
चाहुआन बर सेन । ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ले ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना ।

कवित्त ॥ [2]सब सामंत रु समर । बीर दच्छिन दिसि हंडिय ॥
चाहुआन हुसेन । गज्ज व्यूहं रचि गड्डिय ॥
एक दंत हुसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिसि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुबर ॥
बहुनय [3]अंग आहुठ्ठपति । महन रंभ मचौ सुभर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पद्धरी ॥ घन घाइ घाइ अघ्घाइ सूर । सिंधु औ राग बज्जै करूर ॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क । मुह मार मार [4]बज्जै बबक्क ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) मो.-इन । (२) मो.-हुस्सेन । (३) को.-तब्र । (४) मो.-वुल्लै ।

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस। पष्षर उपट्टि घुटै घुरीस॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब। अच्छरी अच्छनद जानि लुंब॥छं०॥५९॥

गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल। षेचर षपाल कूदै कराल॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह। कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह॥
छं०॥६०॥

चमकंत दंत मध्यै कृपान। मानौं कि ऊक लग्गौ गिरान॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन॥
छं०॥६१॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा॥ चालुक्कां परि सूर रन। सहस एक सुर सत्त॥
चूक चिंत चूकौ चितन। औ घट्टिज्ज विधि बत्त॥छं०॥६२॥
पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान॥
उभै सत्त रावर [1]समर। प्रथीराज सत आन॥छं०॥६३॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति [1]सत्तरहि। सेष जाम पल तीन॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन॥छं०॥६४॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चालुक्क वर। चिंपि सुभर प्रथिराज॥
सुभर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज॥छं०॥६५॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ परे धाइ चहुआन चालुक्क मुष्षं। मनौं मोष मद मत्त जुट्टे कुरष्षं॥
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई॥
छं०॥६६॥

(१) ए. कृ. को.- भर।

झरै सार अग्गी दझै टोप दुभ्भं। मनों तं चनेतं प्रलै अग्गि सज्जं॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही। धसी भारती कासमीरंति सोही॥
छं० ॥ ६७ ॥

दिए नागसुष्षं गजे तं तवानं। ठनक्कंत घंटं फटै पीतवानं॥
बजे बज्ज घाई उकत्तीति चिन्हं। बकै जानि भट्टं प्रसंसी इन्हं॥
छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत सूरं चढ़ै कुंभ तंती। फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी। मनों राह सूरं बंटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥

रुंधी धार मंती सुमंती उछारै। उतक्कंठ भेली जु रंभा विचारै॥
परैं घुम्मि सूरं महा रोस भौनं। मनों वारुनी मद्द प्रथमं सु पौनं॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना।

दूहा॥ औसरि भर पिच्छें परे। समर तिरच्छौ आइ॥
मानहुं पल हुत्तस्नी। भई बीभछ निधाइ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन।

त्रिभंगी॥ तिय विय अरि संतं, बहु वलवंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी।
त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिंदं, बर रंगी॥
विय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर झालं, रन रंगी।
सामंत भर सूरं, दिठ्ठ करूरं, मिलि [1]अरिपूरं, अनभंगी॥छं०॥७२॥
मनु भान पयानं, चढ़ि बर वानं, मिलि बथ्थानं, असिझारं।
ओडन करं डारं, वेन करारं, तामस भारं, तन तारं॥
जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति द्धं, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं।
उर धरि चालुक्कं, सूर अहक्कं, [2]मुर आतक्कं, धक धक्कं॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस वोटं, परि उठ्ठं।
दंतं उप्पारं, कंधय मारं, अरि उत्तारं, भत छुट्टं॥

(१) मो.-आसि। (२) ए. कृ. को.-सुर।

जोगिन्न किलकारी, हसिहिं ततारी,दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन कालं, परि वेहालं, चालुक झालं, बर सारी॥
छं०॥ ७४॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना।

कवित्त॥ वीर बीर आरब्ब। चढ़िय बीरं तन हक्के॥
चावद्दिसि विढ़ढुरे। मोह माया न कसक्के॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुड्ड घिति लग्गे॥
कै छुट्टे मद मोष। जानि बीरन द्रग जग्गे॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन। मति सुभाइ विभ्भाइ परि॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुड्ड आदीत टरि॥ छं०॥ ७५॥

भोलाराय के १०सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा॥ संझ सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस राइ॥
तिय षवास परिगह न्रपति। सिर घुम्मे घट घाइ॥ छं०॥ ७६॥

कवित्त॥ पऱ्यौ समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय॥
परि भट्टी महनंग। छच नष्यौ अरि सक्किय॥
पऱ्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरी लग्गिय॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय॥
रघुबंस पंच पंचौ मिले। बर पंचानन और कवि॥
चिचंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रबि॥ छं०॥ ७७॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ़ से हुसैनं खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

घरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हसेन षान भ्रम॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोऱ्यौ तन तोऱ्यौ॥
अस्त बस्त वज्री कपाट। दधीच ज्यों जोऱ्यौ॥

बर रंभ बरन उतकंठती। सूर सूर उत कंठ मिलि ॥
ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं। गल्ह बीर जुग जुग्ग चलि ॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना।

दूहा ॥ निसि दिन घठिय तिसत्त बर। दल चहुआनन चीन्ह ॥
भिरि भोरा रावर रिनह। रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ७९ ॥

गुरजर राय भीम देव का भागना।

भिरि भग्गौ सुत भुअंग कौ। गरुड़ समर गुर राज ॥
फिरि पच्छौ पुंछौ पटकि। बिन सु गरब तजि लाज ॥ छं० ॥ ८० ॥

कवित्त ॥ षेत जीति चित्रंग। हथ्थ चढ्यौ चहुआनं ॥
के भोरी भर सुभर। लीन ऋप्पह पर आनं ॥
केक किए परलोक। मुक्ति लभ्भौ जुग जानं ॥
पंच तत्त मिलि पंच। सार धारह लग्गानं ॥
चहुआन समर इकतन्नि मह। तहां सेन उत्तरि सुभर ॥
चाजुक्क भीम पट्टन गयौ। करी चंद कित्तिय अमर ॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई।

चौपाई ॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी। जा लगि ससि सूरज नभ सष्षी॥
इह काया माया जिन रष्षी। अंत काल सोई जम भष्षी ॥छं०॥८२॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना।

दूहा ॥ निसि सुपनंतर राज पै। कित्ति आइ कर जोर ॥
नौतन अति उज्जल तनह। नीद न्रपति मन चोर ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं।

जपि जगाइ सोमेस सुअ। मदन भीम चहुआन ॥
देत रूप छची प्रकृति। दरसन तवही पान ॥ छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-गुर। (२) ए. कृ. को.-छत्री।

कोटिलछन सुंदरि सहज। भय सुंदरि तिन प्रेम॥
सूर सुभर डरपै रनह। तौ सुधीर कहि केम॥ छं०॥ ८५॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त॥ तो कित्ती चहुआन। निदरि संसारह चल्लों॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौ उर सल्लों॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुऊन सिर मुंदो॥
हूं सार अडर डौरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी॥ छं०॥ ८६॥

दूहा॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नंव निद्ध॥ छं०॥ ८७॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह॥ छं०॥ ८८॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त॥ जु कछु लिष्यौ लिलाट। सुष्ष अरु दुःष समंतह॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह॥
कलप कोटि टर जाहि। मिटै नन घटै प्रमानह॥
जतन जोर जो करै। रंच नंन मिटै विनानह॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुज्झि चंद गुरराम तरु॥
बरनौ विचित्र राजन बरहि। कही सत्ति मत्ती सु अरु॥छं०॥८९॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये को परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देव जिम कीम॥
रत्ति वाह बर नरिंद सों। दीनों भोरा भीम॥ छं०॥ ९०॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार। सलष नंदन रचि गड्डौ ॥
ता सत्थह चामंड। भीम भट्टी रचि ठड्डौ ॥
महन सीह बर लरन। मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज। प्रात षिभ्भिय बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कैं। भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में। अग्गि तिनक्का झरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग,कड्डी घनं। रत्ति अद्दी मनं, बीज कड्डी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं। हक्क मच्ची रनं, बाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

रुंड मुंडं घनं, ईस इच्छै चुनं। घग्ग भग्गं तनं, ग्राह गंगं जनं ॥
संभ रुड्डी मनं, तार चौसट्ठिनं। भूत प्रेतं तनं, भष्ष दिन्नौं घनं ॥छं०॥९३॥
जानि सीलं रुधी, कव्वि ओपम सुधी। मंन भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधानें प्रधान वीर काम आए, उनके नाम।

कवित्त ॥ दै अरि प्रच्छौ जैत। पर्‍यौ पांवार रूपघन ॥
पर्‍यौ किल्ह चालुक्क। संधि चालुक्क हजूरन ॥
पर्‍यौं वीर बग्गरी। भयौ अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ। सिंघ रष्यौ पिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल। दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अंभार पष। चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥छं०॥९५॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल। लुथ्थि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल [1]होंड़े परिय। तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-दौड़े।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [1]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। षिभ्भिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक न पायौ ॥
[2]कंन्ह बैन [3]संभलियं। फेर बर भीम धसायौ ॥
उच्छरिय पानि बर मद्द भिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारथ्थ कहुं ॥छं०॥९७॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात बन होत। होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक षत षग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर बिरुभ्भत [4]वथ गत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर बिडुरि। ठठुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्षन गौ सूर तन ॥छं० ॥९८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीम भिरि चिचकोटं। परे मार ओटे चहूआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

किए सूर कोटं न हल्लैं हलाए। अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं वीर आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छत्र बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
छं० ॥ १०० ॥

भज्यौ चित्त [5]वाहं लजे सूर दिष्षं। तहां चंद कब्बी सु ओपम्म पिष्षं ॥
पियं चास पिष्षं सषी पास लग्गी। मनों बाल बहू परे [6]पाइ अग्गी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए.-ढुंढन। (२) मो.-कैन बैनै संभलिय फेरि बर नीम घसायौ।
(३) ए.-सभंरिलिय ॥ (४) ए. कृ. को.-वग रत्तां। (५) मो.-लाह। (६) कौ.-आइ।

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं । मनौं 'बीय सौकी इषी भाग वट्टं ॥
उड़े कादरं हक्क हरि जीव चासं । उपंमा कहूं फुटै नैन पासं ॥
छं० ॥ १०२ ॥

मनौं पुत्तली कंठ 'गढ़ि चित्त लाही । करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही ॥
फुटै फेफरं पेट तारंग भुल्लै । मनौं नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥
छं० ॥ १०३ ॥

दिए भाग मुष्षी गजं हत्थ षग्गी । षितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी ॥
उपंमा न पाई उपंमा न बंची । मनौं इंद्र हथ्थं करं राम पंची ॥
छं० ॥ १०४ ॥

'करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं । जकै सिंधु भारं जुरै जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसै प्रतंगं चलायौ । भगंदत्त 'छव्वी तहां सूर पायौ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कंध बंधं कमंधं निनारैं । उपंमा तिनं की न ओपंम चारै ॥
हकै सीस नीचं धरं उंच धायौ । मनो भंगुरी रूप न्त्रपती दिषायौ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

सुमं पाज घट्टै कितं साम काजं । तिते 'ऊपरे सूर चढ़ि कित्ति पाजं ॥
बड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी । षिगं पक्ष की भंति ज्यौं पाल ओगी ॥
छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त ॥ चढ़त दीह विप्पहर । परिग हैज्जार पंच लुथि ॥
बान बचन भरि नरिंद । भारि उच्चारि देव धपि ॥
घट छह बर हज्जार । रुकि मंझे चहुआनं ॥
बर कहून चालुक । मत्ति कीनी 'परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुठि तहां । तौ पट्टनवै कट्टयौ ॥
उच्चर्यौ बंभ भट्टी विहर । धार धार अपु चट्टयौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए. कृ. को.-विंय पिंय, । (२) मो.-गहि । (३) ए. कृ. को.-गजं ।
(४) ए. कृ. को.-छब्बं । (५) ए. कृ. को.-उत्तरे । (६) मो.-परिवानं ।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निंगर राव। झुझझ धर रावर मंडिय॥
रुक्कि सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय॥
परिगह्यि सब सथ्थ। गयौ चालुक्क बजाइय॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि निय विप्पहर॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन वर कुसर॥ छं० ॥१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा॥ तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि॥
तिन में कोइ न ग्रंह गयौ। सार धार तन षंडि॥ छं० ॥ ११० ॥
बाव ह्रूर कोइ न भयौ। धभि चालुक्की सेन॥
सामि काज तन तुंग सौ। चिंन करि जान्यौ जेन॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त॥ षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में॥
है गै वर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रब्बत [1]मुक्की॥
दिन अट्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी॥
जोगिनी न्त्रपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर बर धरी॥छं०॥११२॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा॥ ढिल्ली न्त्रप ढिल्ली गयौ। बजि न्त्रिघात सुदंद॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद॥छं०॥११३॥
जस धवलौ मन उज्जलौ। न्त्रिब्बौ पहुमि न होइ॥
भूत भविच्छति व्रित्त मन। चिचनहारं न कोइ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-मुक्की। (२) ए. कृ. को.-साचित।

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना ।

षंडौ सुनि पठयौ सु न्रप । बंज्जि निसानन घाइ ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बिय बर करि परनाइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राज्ञा प्राथिराज विजय नामं बत्तीसमो प्रस्तावः ॥३२॥

अथ इन्द्रावती व्याह ।

(तेंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट । ह्वर बंध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति । सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अम्रत रत्त विष होत । अम्रत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति । सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कठु सों कठु बर बंधियै । नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यों बरनी बर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमंग पँवार । चढ़े प्रथिराज प्रपत्ते ॥
समर दिसा चालुक्क । [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद । दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुभौ [7]घर जाइ तौ । न्रप बर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत र । लज्ज बंधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

---

(१) ए. कृ. को.-तत । (२) ए. कृ. को.-तद्दिनां । (३) ए. कृ. को.-मति ।
(४) ए. कृ. को.-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै । (५) मो.-कंठ ।
(६) मो.-सुजो । (७) ए. कृ. को.-पर । (८) ए. कृ. को.-दिप ।

कहै जोइ वरदाइ। मंत कविचंद सु आमन॥
मन वासौं मन मिलत। जियत कै कंठ सामन॥
जो वासुर मुर पंच। [1]पग्ग मंडै चहुआनं॥
तौ भाविक जिह लेष। तिही ह्वैहै परिमानं॥
भावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न। दइय दुसंकह जानि गति॥
लिपि बाल सीस दुष सुष्ष दुहु। सत्य होइ परमान मति॥छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ॥
कै धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ॥ छं०॥ ४॥
इन भव न्रप सोमेस सुत्र। जुध बंधन सुरतान॥
कै जलद्दि बूड़वि मरै। अवर न [3]वंछौं प्रान॥ छं०॥ ५॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त॥ सषी कहै सुनि बत्त। सुतौ दानव कुल कहियै॥
अवर जाति अनेक। राइ [4]गुर परनह लहियै॥
करै कोन परसंग। पाइ म्रगमद घनसारं॥
कोन करै कुष्टीन। संग लहि कामवतारं॥
तो पित्त अवर बर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरचैं रचैं न सुच॥ छं०॥ ६॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा॥ तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुचीय॥
बोलि विंन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय॥ छं०॥ ७॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

(१) ए. कृ. को.-मड्डि आयौ। (२) ए. कृ. को.-भंजी।
(३) ए. कृ. को. छंडौ। (४) ए. कृ. को.-गुन।

कहै भीम कविचंद [1]सुन । स्वामि काम तुम अट्ठ ॥
सेन सगप्पन रीत नह । तुम दानव कुल चट्ठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ हौं सु भीम मालव नरिंद । मोहि घर बर अच्छिय ॥
सवा लाष मो ग्राम । ठाम संपति बहु लच्छिय ॥
विधि विधान त्रिम्मान । कौन मिट्टै इह बत्तिय ॥
होनहार होइहै पुरुष । जंपै गति मत्तिय ॥
तुम कहो नाम बरदाइ बर । गुरुराज बंदै चरन ॥
ओछी सु बत्त कड्ढौ कथन । एह सगप्पन विधि बरन ॥ छं० ॥ ९ ॥

कविचंन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है ।

दूहा ॥ अहो भीम [2]सत्तह सुमति । तुम मतिमान प्रमान ॥
औसर तकि कीजै [3]जुगत । औसर लहिजै दान ॥ छं० ॥ १० ॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरबीर ही नहीं जानते ।

कवित्त ॥ कहै भीम पज्जून । सुनौ पामर मतिहीना ॥
[4]अंमत कियौ तुम मंत । बरन बरनौ षग लीना ॥
तुम सहाब बलि बंधि । गर्ब सिर उप्पर लीना ॥
गिनैं और तिल मत्त । कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना ॥
छचीन बंस छत्तीस कुल । सम समान गिनियै अवर ॥
घरु जाहु राज सुक्कौ बरन । करन ब्याह उच्छाह नर ॥ छं० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो ।

(१) ए. कृ. को.-कहि । (२) ए. कृ. को.-सतिमत्ति ।
(३) को. कृ. ए.-जु रन । (४) मो.-अमन ।